शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य का भाषायी सौन्दर्य

भोजराज बारस्कर (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे (निर्देशक)
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल साईंसेस
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

काव्य में कवि या रचनाकार मनोभावों को कलात्मक रूप से भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करता है। भाषा कवि की अनुभूतियों को आकार देने का माध्यम बनती है जिससे कवि की अनुभूतियां सार्वजनिक हो जातीहैं। काव्य मनुष्य को संकुचित दायरे से ऊपर उठाता है, तो सृष्टि से रागात्मक सम्बन्ध भी स्थापित करता है। भाषा सांस्कृतिक परम्पराओं की वाहक होती है। काव्य-भाषा के माध्यम से कवि प्रकृति, मनुष्य व समाज से संबंधित विविध पक्षों को जीवन्तता के साथ प्रस्तुत करता है। कवि अपने मनोभावों को भाषिक कौशल से व्यक्त कर काव्य में रोचकता, सरसता, प्रभावपूर्णता व मधुरता का संचार करता है साथ ही काव्य के सौन्दर्य में भी वृद्धि करता है। इक्कीसवीं सदी के प्रमुख कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में भाषा के विविध रूप अभिव्यक्त हुए हैं प्रस्तुत शोध पत्र में उनके काव्य में भाषायी सौन्दर्य पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

कविता और समाज का सम्बन्ध अनंत काल से घनिष्ट रहा है। बदलते परिवेश के साथ कविता की शिल्प-शैली में बदलाव आया है। कवि की अपनी भाषा होती है। अपने आस-पास के परिवेश में रहकर कवि भाषा को ग्रहण करता है जो काव्य रचना में पल्लवित होती है। काव्य में कला पक्ष के अन्तर्गत कविता को मर्मस्पर्शी बनाने में सार्थक ध्वनि समूह का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आज कविता छन्दमुक्त होती जा रही है, जिसमें न गीतात्मकता है और न संगीतात्मकता, न लय है, न तुक, न यति है और न ही गति। कवि अपने स्वच्छंद भावों की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से कर रहा है। जितेन्द्र श्रीवास्तव की अधिकांश कविताएं छंदमुक्त होने के बावजूद पाठक को प्रभावित करने में समर्थ है, जो संवादात्मक शैली में लिखी है।

आज हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियों एवं प्रभावशाली घटनाओं का परिवर्तित रूप देख रहे हैं। इस परिवर्तन ने सर्जन को रचना की नई एवं जटिल अभिव्यक्ति दी। रचनाकार के सामने जब संप्रेषण की समस्या उपस्थित हुई तब प्रयोगवाद और नईकविता का उद्भव हुआ। शिल्प के संबंध में डॉ. नगेन्द्र का कथन है, "शिल्प शब्द का आयात साहित्य-समीक्षा के प्रायः तब से हुआ है, जब से ललित कलाओं के अन्तःसम्बन्ध तथा पारस्परिक अंतःनिवेश की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक स्तर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पर विशेष चर्चा होने लगी है।"[1] वास्तव में देखा जाय तो 'काव्य-कृति' के निर्माण में जिन उपादानों द्वारा काव्य की अभिव्यक्ति का ढांचा तैयार किया जाता है, उन्हें काव्य तत्वों के अन्तर्गत समाहित किया जाता है। गिरिजा कुमार माथुर के अनुसार, "शिल्प संबंधी तत्वों के एक ऐसे विधान की आवश्यकता है, जो न केवल भाषा, छन्द, गति-विरामों, संगीत के मूल सिद्धांतों को निश्चित करे बल्कि वह हमारे काव्य-शिल्प में भी सहायक हो। अलंकार शास्त्र की भांति काव्य का गणित या व्याकरण अथवा बाह्य सजावट ही बनकर न रह जाये।"[2] गिरिजाकुमार माथुर ने लिखा है "नये विषयों के साथ-साथ उपमान, प्रतीक, चित्र, रंग, छन्द, लय, अन्तःसंगीत, भाषा और शब्द योजना के नवीन प्रयोग स्थिर हुए, इन सब ने मिलकर रूप-विधान की दिषा में एक व्यापक क्रान्ति उत्पन्न कर दी है।"[3] शिल्प के प्रमुख तत्वों में से भाषा और छन्द पर नये कवियों ने अधिक लिखा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि पश्चिमी जगत में भाषा तत्व को ही सर्वोपरि माना जाता है। काव्य में सबसे पहले भाषा और शब्द आते हैं और शब्द की अर्थवत्ता की सही पकड़ ही रचनाकार को सुदृढ़ बनाती है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य का भाषिक सौन्दर्य

समकालीन कविता की युवा पीढ़ी के अति चर्चित कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव का काव्य बहुआयामी है विविधता लिए हुए है। जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविताओं में गाँव-देहात से लेकर पहाड़, कस्बा और महानगर तक के विभिन्न विषयों, अनुभवों को कविता के साँचे में ढालकर भाषा की सादगी और कहन की ताजगी में असंभव को संभव कर लेते हैं। मितव्ययिता और शब्द-चयन में बेहद सजग कवि ने मानवीय क्रूर व्यवस्था के विरूद्ध एक सफल हस्तक्षेप किया है। जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविता में बार-बार लोक बोली के शब्दों का सहज स्वाभाविक रूप में प्रयोग करते हैं। अपनी काव्य भाषा को दुरूह नहीं होने देते हैं। उनकी भाषा कहीं भी संप्रेषणीयता में बाधक नहीं बनती है। भाषा-शिल्प की दृष्टि से उनका 'कायांतरण' कविता संग्रह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनका काव्य ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि संदर्भों से रूबरू होने का एक माध्यम है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव सन् 1990 से कविकर्म में संलग्न हैं। उनककी कविताएँ मानवीय जीवन के बदलते हुए संदर्भों को अधोरेखित करती है। उनकी कविताओं में भाषा, भावों और अभिव्यक्ति की सहजता के बावजूद बहुत अधिक परिष्कार देखने को मिलता है। कलात्मक स्तर पर यह तथ्य समकालीन समय की गढ़ी हुई टकसाली शब्दावली व भावों के घमासान में भीड़ से अलग और श्रेष्ठ स्थान प्रदान करता है। इस संदर्भ में 'एक भाई का पत्र' कविता अपनी संरचना और अर्थवत्ता में अद्भुत है। कवि एक पत्र के पहुँचने की संभावनाओं के साथ कविता की शुरूआत करता है :

"तुम्हारी इच्छाओं की सरकार बन जाएगी
या गिर जाएगी तुम्हारे खिलाफ
रोज फैसले करने वाली हुकूमत
धराशाही हो पाएंगी निजामों के मंसूबे ?[4]

मात्र यह चार पंक्तियाँ मौजूदा व्यवस्था के हर एक छल-छद्म को यथार्थ रूप में उजागर करने के लिए पर्याप्त है। जिस प्रकार एक चित्रकार पारम्परिक प्रतीक रूपों द्वारा चित्रात्मक भाषा को उपयोग में लाता है, उसी प्रकार रचनाकार अपनी

संवेदनाओं, इच्छाओं को यथार्थ रूप में सामने उपस्थित करने हेतु बिम्ब तथा प्रतीक रूपी चित्र पाठक के मस्तिष्क में उपस्थित कर देता है। बिना चित्रों, प्रतीकों, रूपकों और बिम्बों की सहायता के मानव अभिव्यक्ति को स्पष्ट नहीं कर पाता। कवि अनेक बिम्बों, प्रतीकों आदि के माध्यम से मानवीय अनुभूतियों के यथार्थ चित्र उत्कीर्ण करता है। परंपरा के साथ संबंध स्थापित करते हुए कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव ने समकालीन यथार्थ को चित्रित किया है। किसानों के संदर्भ में बात करते हुए कवि शब्द-चित्र बनाता है :

"पर यह सुबह सुहानी है कि उम्मीद बुझाती
ठीक-ठीक बताएँगे वे किसान
जो तार-तार धोती लपेटे मिर्जई अंटकाए
देखते हैं कभी खलिहान कभी बादल।"[5]

जितेन्द्र श्रीवास्तव की काव्य-भाषा की सबसे बड़ी विशेषता शब्द-चयन की है। वह कभी भी बिना वजह शब्दों का प्रयोग कर वाक्य को भारी नहीं बनाते। बहुत ही सधे हुए शब्दों का प्रयोग करना उनके काव्य का उत्कर्ष है। मितभाषिता जितेन्द्र श्रीवास्तव का अस्त्र है। उनकी कविताओं की तमाम ऐसी पंक्तियाँ हैं, जो इसी प्रकार कम शब्दों में बड़े लक्ष्यों को साधने में सफल हो जाती है। यथा :

"अब भी असंख्य 'होरियों' की गर्दनें दबी हुई हैं
'नए रायसाहबों' की
टाँगों के बीच।"[6]

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताएँ साधारण-सी लगती हैं, लेकिन सचमुच साधारण कविताएँ नहीं हैं। इनकी कविताओं को असाधारण बनाने वाली चीजें हैं- उसमें घुला जीवन रस, उल्लास और चंचल-निर्मल भाषा। वैसे जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, जितेन्द्र श्रीवास्तव लाजवाब हैं। वे सीधी सरल भाषा लिखकर जो असर पैदा कर देते हैं, कई लोग भाषा में तमाम तरह की उठा-पटक के बाद भी नहीं कर पाते हैं। उदाहरण के लिए कुछ कविताओं के ये अंश देखे जा सकते हैं' :

"मैं कवि नहीं झूठ फरेब का
रूपया-पैसा सोने-चाँदी का
मैं कवि हूँ जीवन का
सपनों का
उजास भरी आँखों का
मैं कवि हूँ उन होठों का
जिनको काट गई है चैती पुरवा
मैं कवि हूँ उन कंधों का
जो धूस गए हैं बोझ उठाते"[7]

लोक एवं उसकी भाषा को बचाना एवं लोकसंस्कृति कवि जितेन्द्र के काव्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उनकी कविताओं में लोक शब्दावली प्रचुर मात्रा में मिलती है। कई क्रियारूप भी संभवतः पहली बार हिन्दी की कविता में प्रयुक्त हुए हैं। तिजहरी, हरिहर-हरिहर, पीयर-पीयर, धधाकर मिलते हैं लोग, लोग पानीदार, सोनमछरी, भरापन, लट-ओरियान, मनरूँधित, छीना-झपटी, पियराई आदि के प्रयोग से खड़ी बोली हिन्दी की कविता समृद्ध हुई है।कविता का निजी लहजा भी स्पष्ट होता है। भाषा के प्रति, शब्द-चयन के प्रति जितेन्द्र श्रीवास्तव सचेत हैं। शब्दों की मितव्ययिता जितेन्द्र की सामर्थ्य है। बोलने-बतियाने के लहजे में संवाद के प्रति आग्रह ने पठनीयता को जीवित रखा है। उनकी भाषा की बुनावट कविता की भावार्थ परंपरा और आधुनिकता के बीच नया रिश्ता कायम करती है। अलंकार के सार्थक प्रयोग और शब्द चयन में विशेष ध्यान देने से कविता भाव संप्रेषण में सहायक होती है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में पूर्वी उत्तरप्रदेश के लोक बिम्ब और मुहावरे मिलते हैं। वे लोक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जीवन और उसकी परम्परा से परिचित हैं। उनके काव्य संग्रह कविताओं में से अधिकांश कविताएँ ताजे-टटके बिंब निर्मित करती हैं। इन बिंबों का सर्वथा नया प्रयोग होता है। 'कविताई' को ये बिंब नए आयाम देते हैं। 'उजास : कुछ कविताएँ शीर्षक के अंतर्गत बारह छोटी-छोटी कविताएँ जितेन्द्र के काव्य को मौलिक बनाती हैं। उनकी काव्य-कला वर्तमान की मुठभेड़ की प्रक्रिया में अपना रूप विन्यास हासिल करती है। एक निर्विकार किस्म की भाषा और भाव-बोधों की भित्ति पर चित्रित जितेन्द्र श्रीवास्तव की काव्य संवेदना अपने सारे रूप में भारतीय किस्म की आधुनिकता में रची पगी होने के साथ ही देशज और घरेलू किस्म के बिंबों से सज्जित है :

आज फिर मन उदास है
आज फिर तुम याद आई हो
घर के पीछे वाली कनेर में
एक फूल चुपचाप खिल उठा है।"[8]

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविता में बिम्ब विधान का संरचनागत योगदान है। उनको कविता में दृश्य बिम्ब प्रस्तुत करने की क्षमता अद्भुत है। उनके बिम्ब प्रायः रोजमर्रा के जीवन में प्रयुक्त विशेषणों और उपमानों से बनते हैं और संदर्भोचित अर्थ-क्षमता से सम्पन्न होते हैं। अतः वे दुर्बोधता या क्लिष्टता से मुक्त हैं। 'मैं इक चिड़ियाँ हूँ पापा' कविता में कवि 'चिड़िया को बेटियों की आकांक्षा के प्रतीक रूप में व्यक्त करते हैं-

"धरती चिड़िया के पास है
आसमान उसकी आस है
पंख उसके पास है
बिना रोक-टोक वह उड़ती है
थक जाए तो
जिस टहनी पर चाहती है
बैठती है
गीत अपने गाती है"[9]

वे बेटियों के लिए भी इसी प्रकार की बंधन मुक्त दुनिया चाहते हैं। अतः यहाँ चिड़िया शब्द बेटियों की आकांक्षा का प्रतीक है। जितेन्द्र श्रीवास्तव भावजगत के साथ ही यथार्थ जगत की भी यात्रा करते हैं, क्योंकि वे आँसुओं में घुली हुई दर्द की अंतहीन यात्रा को भी समग्रता में पहचानते हैं-

"समुद्र चाहे जितना हो अगम
छिपा नहीं पाता अपना खारापन
पर स्त्रियाँ अनादिकाल से पी रही हैं अपना खारापन
बदल रही हैं
आँखों के नमक को चेहरे के नमक में
और पुरूष चमत्कृत है खुश है
कि यह रूप-लावण्य उसके लिए है।"[10]

यहाँ पर पुराने प्रतीकों, उपमानों की निरर्थकता से बाहर निकालकर नए प्रतिमान निर्मित करने के लिए विवश कर देनेवाली काव्य-संवेदना है। व्यंग्यात्मक भाषा भी काव्य के उद्देश्य को पूर्ण करने में समर्थ होती है। आम आदमी के विरूद्ध भूमण्डलीकरण, उदारवाद, खुली अर्थव्यवस्था, बाजारवाद-वस्तुवाद, विज्ञापनवाद, नवउदारवाद-साम्राज्यवाद एवं उत्तर आधुनिकता का चोला ओढ़कर जो मूल्यहीन, शीलविहीन संस्कृति तेजी से बढ़ रही है, उस संस्कृति के समक्ष कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की चिंता जायज है और 21वीं शताब्दी के लिए बहुत जरूरी भी :

"रूकिए जरा देखिए अपने-अपने गिरेबान में
और सोचिए
क्या सचमुच यह मगन होकर
नाचने-गाने का समय है।"[11]

इस कविता में जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी ही नहीं बल्कि हिन्दी कविता की परंपरागत, चिर-परिचित

लीक को संवेदना एवं शिल्प दोनों स्तरों पर कायांतरित करते हैं।

कवि अपनी काव्य-भाषा की क्षमता एवं प्रवाह को बनाए रखने के लिए, भाषा के स्वरूप में नवीनता लाने के लिए बिंब, प्रतीक, मिथक आदि का सहारा लेता है। लेकिन कभी-कभी इनके प्रयोग से भी अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में पूर्ण समर्थ नहीं हो पाता। तब वे अपनी रचना में फैंटेसी का प्रयोग करते हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी लंबी कविताओं में फैंटेसी का प्रयोग पाठक को वास्तविकता से रूबरू कराने हेतु किया है

"इस समय घना अँधेरा है
दृश्य डूब गए हैं रात के जादू में
कहीं-कहीं कभी-कभी दिखते हैं
जुगनुओं की तरह कुछ चिराग
बस सन्नाटे में उभरती है रेल की आवाज"[12]

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं के भीतर ग्रामीण शब्दों की भरमार दिखाई देती है। संभवतः इसलिए कि उनकी कविता लोकजीवन के समीप की कविता है।

"लाल चुनरिया
ओढ़ सँवरिया
विचर रही है खेतों में
हरिहर-हरिहर फसलों में
पीयर-पीयर माटी में"[14]

असल में जहाँ कृत्रिमता होती है, वहाँ शब्दों से लेकर भावों तक प्रतिस्थापन मौजूद होता है। लेकिन जितेन्द्र श्रीवास्तव के यहाँ 'हरिहर-हरिहर' से लेकर 'तिजहरी' व 'उजास' जैसे शब्दों की प्रतिस्थापना नहीं हैं, ये शब्द अपनी सार्वभौमिक सत्ता के साथ उपस्थित हैं, जो कवि की ईमानदारी और अनुभवों के खरेपन को भी व्यक्त करते हैं।

जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में प्रकृति-चित्र प्रायः नारी-चित्रों के साथ घुले-मिले हैं। उनके प्राकृतिक-चित्रों में विरह और मिलन की यादें समायी होती हैं। प्रकृति कवि के सामने प्रेयसी के रूप में आती है। कभी-कभी धूप के रूप में आती है। कभी वसंत हवा के रूप में तो कभी बरखा के रूप में। उनका भाषाई कौशल उनके प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत भी देखा जा सकता है। आशा से भरे कवि के मन के प्रिय की मनोदशा का प्रकृति चित्रण देखिए

"आयी हो तुम जीवन में ऐसे
आती है बरखा
जेठ-वैशाख की तेज धूप में जैसे।"[14]

यथार्थ संवहन के लिए भाषा के नये प्रयोग जितेन्द्र श्रीवास्तव के कविता संग्रह में हैं, किन्तु प्रयोग शिल्प के चमत्कार के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक विसंगतियों के मूर्तन के लिए किया है। 'एक नया गीत' उन छंद प्रेमी तुक्कड़ों को जवाब है कि तुक तभी चलेगा, जब कुछ विषय भी हो :

"लू लू हुल्लू हुल्लू
लोकतंत्र उड़ा चुल्लू-चुल्लू
चारों ओर उल्लू-उल्लू
हा हा हू हू...हा हा हू हू
होनो लू लू
मोनो लू लू
पोनो लू लू"[15]

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में देशज शब्दों का प्रयोग सहजता से किया गया है। जैसे : डगर रहा है बँहटिया, लुटियन, जवारी, मेहरा जाते हैं बिस्कुट, लोकाते थे, ठेहुने के बल आदि शब्द समकालीन कविता की सीमित शब्द संपदा में वृद्धि अवश्य करते हैं, लेकिन क्षेत्रीयता के प्रभाव पर प्रश्न उठ सकते हैं। इसके अतिरिक्त जितेन्द्र

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

श्रीवास्तव नये शब्दों को गढ़ते हैं। 'तुरंता हो चुकी इस दुनिया में राग अतीती जैसे प्रयोग हिन्दी के दायरे को विस्तृत करते हैं और जितेन्द्र श्रीवास्तव की सर्जनात्मकता का प्रमाण बनते हैं:

फोन का नेटवर्क
निर्भर है मशीनों पर
होता ही रहता है जाम
आए दिन
पर फोन नहीं है जीवन
फिर कैसे हो जाता है जाम
रिश्तों का नेटवर्क।"[16]

जितेन्द्र की कविताओं में उपेक्षित सौन्दर्य को पर्याप्त महत्व मिला है। उनके काव्य में किसान-जीवन की शब्दावली भरपूर है। यथा :

"चलो सुलेखा तुम्हारे साथ चलूँ एक ऐसे गाँव
जहाँ अब भी बचा है उत्सव जीवन का
जहाँ बचा है अभी आँखों में पानी
जहाँ रंग नहीं उतरा है लाज का
चलो उस गाँव चलें
जहाँ जब भी मिलें धधाकर मिलते हैं लोग
जहाँ अब भी त्योहारों पर लगते हैं मेले।"[17]

काव्य-भाषा वही है, जो अपने विचारों की अभिव्यक्ति सामान्य किन्तु विशिष्ट उदात्त शब्दों से मानवीय, प्राकृतिक और सौन्दर्यमय उपादानों से संवार कर प्रस्तुत करे तथा जिसमें भावाभिव्यक्ति सरल, गुणग्राह्य और स्पष्ट हो। निश्चित ही जितेन्द्र श्रीवास्तव की काव्य-भाषा विविध गुणों से सम्पन्न है। जिससे कारण वह काव्य-अभिव्यक्ति में सफल सिद्ध हुई है। उनकी काव्य-भाषा और शिल्प आगामी रचनाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकेगी। उनकी काव्य-भाषा की पहचान, उनके अनूठे प्रतीक, बिंब, प्रचुर शब्द का विविधतापूर्ण प्रयोग, मुहावरे-लोकोक्तियों का प्रयोग आदि विशिष्ट है। विविधता की दृष्टि से भी देखें तो जितेन्द्र तत्सम तद्भव, देशन, विदेशज तथा ग्रामीण शब्दों का प्रयोग बहुत ही कलात्मक ढंग से करते हैं। घरेलु गद्य की गरिमा से रची-पगी भाषा में लिखी गई उनकी कविताओं में अपने समय को समझने का आग्रह और हत्यारों के विरोध का तीखा स्वर मौजूद है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव के हृदय की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति ही उनकी कविताओं में उपस्थित हुई है। उसकी अनुभूति सर्वसाधारण से भिन्न है तथा उनके हृदय की निर्मलता, कोमलता और पवित्रता ही कविता को मर्मस्पर्शी बनाती है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य का भाषिक सौन्दर्य समकालीन काव्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी काव्य-भाषा एक ओर यथार्थ चित्रण कर रही है, तो दूसरी ओर काव्य के कोमल और माधुर्य रूप का अंकन भी। जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य की कोमलकांत शब्दावली से पाठक भी रूबरू होता है। उनकी कविताएं मानवता की रक्षा हेतु कटिबद्ध है। साथ ही उसमें 'चाहिए' की अंतर्ध्वनि सुनायी देती है। यथार्थ चित्रण उपस्थित होने पर भी उनकी कविताओं में भाषा की कटुता कोसों दूर है। जितेन्द्र श्रीवास्तव का कवि कर्म वैचारिक रूप से जितना उद्वेलित करता है, शिल्पगत रूप में उतना ही अनुकरणीय व प्रशंसनीय भी है। कवि ने समान्य भाषा का प्रयोग करके हमारे समाज के यथार्थ को सशक्त ढंग से व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. (डॉ.) नगेन्द्र, *शैली विज्ञान*, पृष्ठ 14
2. सियाराम शरण गुप्त, *प्रतीक-10*, पृष्ठ 28-29
3. *आलोचना पत्रिका*, जुलाई, 1954, पृष्ठ 60

4. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *असुन्दर सुन्दर*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 103
5. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *अनभै कथा*, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, (सं. 2003) पृष्ठ 99
6. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *कायांतरण*, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, (प्रथम सं. 2012), पृष्ठ 47
7. वही, पृष्ठ 66
8. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *बिल्कुल तुम्हारी तरह*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 75
9. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *असुन्दर सुन्दर*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 21
10. जितेन्द्र श्रीवास्तव,*कायांतरण*, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, (प्रथम सं. 2012), पृष्ठ 11
11. वही, पृष्ठ 47
12. वही, पृष्ठ 114
13. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *बिल्कुल तुम्हारी तरह*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 20
14. वही, पृष्ठ 49
15. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *कायांतरण*, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, (प्रथम सं. 2012), पृष्ठ 94
16. वही, पृष्ठ 78-79
17. जितेन्द्र श्रीवास्तव, *बिल्कुल तुम्हारी तरह*, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, (सं. 2011), पृष्ठ 36